सच्ची दोस्ती

समुद्र किनारे **घने जंगलों** में एक **इच्छाधारी नागिन** रहती थी। उसकी दो सहेलियां भी थी। दोनों सहेलियां इच्छाधारी नागिन से जलन रखती थी लेकिन इच्छाधारी नागिन इस बात से अनजान थी।

वे इच्छाधारी नागिन के बारे में बुरी बुरी बातें कह रही थी। यह बात एक दिन इच्छाधारी नागिन ने सुन ली। उसे यह बहुत बुरा लगा। उसने सोचा कोई ऐसी सहेली को जो दिल की साफ हो और सच्ची सहेली हो।

यह जानने के बाद भी कि उसकी सहेलियां उससे जलन रखती हैं फिर भी इच्छाधारी नागिन ने उनके साथ कोई खराब बर्ताव नहीं किया और ना ही उनके साथ किसी प्रकार का खराब व्यवहार किया।

वह पहले की तरह ही उनसे मिलने लगी। लेकिन उसके मन में निराशा जरूर थी। एक दिन की बात है **समुद्र में तूफान** आया। तूफान बहुत तेज था जिसमें बहुत ज्यादा क्षति हुई थी।

तूफान के शांत होने के बाद इच्छाधारी नागिन समुद्र तट पर गई। वह देखना चाहती थी कि समुद्र के इस समय हालात कैसे हैं ? जब वह वहाँ पर पहुंची तो उसे एक **समुद्र की जलपरी** दिखाई दी जोकि बेहोशी की हालत में समुद्र तट पर पड़ी हुई थी।

इच्छाधारी नागिन ने अपनी **जादुई शक्तियों** से जलपरी को होश में लाया और उसे फिर पानी में छोड़ दिया। पानी में जाने के बाद जलपरी ने **नागिन** को धन्यवाद कहा और कहा कि क्या हम एक अच्छे दोस्त बन सकते हैं ?

नागिन ने कहा हाँ हम एक अच्छे दोस्त बन सकते हैं। उसके बाद जलपरी और नागिन रोज एक दूसरे से उसी तट पर मिलने लगे और खूब ढेर सारी बातें करने लगे।

नागिन जंगल की बातें बताती तो जलपरी समुद्र की। दोनों एक अच्छे मित्र बन चुके थे। यह बात नागिन की सहेलियों को अच्छी नहीं लगी। एक दिन इच्छाधारी नागिन की दोनों सहेलियों ने जलपरी से कहा, " इच्छाधारी नागिन बहुत ही बुरी है। वह पीठ पीछे तुम्हारी बुराइयां करती है। वह कहती है कि अगर मैं जलपरी को नहीं बचाती तो कब की मर चुकी होती। इसपर भी जलपरी अच्छे से बात नहीं करती है और इस तरह से तमाम बुराइयां करती रहती है। अब तो वह कह रही थी कि मैं जलपरी से कभी मिलाने नहीं जाऊंगी और इसीलिए वह नहीं आने वाली है। "

तब जलपरी ने कहा, " ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि इच्छाधारी नागिन मेरी सबसे अच्छी सहेली है। " तब इच्छाधारी नागिन की सहेली ने कहा, " ठीक है। तुम देख लेना वह नहीं आएगी। " ऐसा कहकर वह दोनों वहाँ से चली गयी।

इसके बाद इच्छाधारी नागिन की सहेलियों ने इच्छाधारी नागिन को भी ऐसे ही भड़काया। उन्होंने कहा कि, " आज हम जलपरी से मिलने गए थे। तब उसने कहा कि वह इच्छाधारी नागिन से नहीं मिलना चाहती। इच्छाधारी नागिन जहरीली है। "

इच्छाधारी नागिन ने कहा, " नहीं वह ऐसा नहीं कह सकती है। वह मेरी सबसे अच्छी सहेली है। वह मुझसे मिलने जरूर आएगी। " उसके बाद वह जलपरी से मिलने पहुंची।

उसने देखा कि समुद्र के तट पर जलपरी नहीं थी। वह जलपरी को ढूंढने लगी। कुछ देर बाद जलपरी वहां पर आई और उसने कहा मुझे पूरा विश्वास था कि तुम जरूर आओगी और इसीलिए मैं अंदर बैठकर तुम्हारी राह देख रही थी और तुम्हारे आने के कुछ देर बाद निकली क्योंकि मैं देखना चाहती थी कि क्या तुम यहां से जाओगी या फिर मेरा इंतजार करोगी।

तुम्हे पता है आज तुम्हारी सहेलियां आई थीं। वे तुम्हारे बारे में बुरी कर रही थी। इसपर इच्छाधारी नागिन मुस्कुराई और उसने कहा कि, " उन्होंने मुझसे भी तुम्हारे बारे में इसी तरह की बाते कहीं, लेकिन वह नादान है। उनकी बातों का हमें बुरा नहीं मानना चाहिए। समय आने पर उन्हें सच्ची दोस्ती के मायने समझ आ जायेंगे। "

इसपर जलपरी ने भी हां कहा। यह सब बातें इच्छाधारी नागिन की सहेलियां सुन रही थी। वे दोनों तुरंत आई और क्षमा मांगने लगे जलपरी और इच्छाधारी नागिन ने उन्हें क्षमा कर दिया उसके बाद चारों मिलकर अच्छे से रहने लगे।